कौटिल्य एवं मैकियावेली की राजनीतिक व प्रशासनिक दृष्टि : एक तुलनात्मक अध्ययन

सिद्धार्थ ओझा
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र

प्राचीन भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को यथार्थ स्वरूप प्रदान करने में कौटिल्य का योगदान सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है, जो एक विशुद्ध राजनीतिक विचारक थे। उनका ग्रन्थ 'अर्थशास्त्र' राजनीतिक क्षेत्र में विशिष्ट स्थान रखता है। एक प्रशासकीय संगठन की योजना के रूप में अर्थशास्त्र से श्रेष्ठ ग्रन्थ भारतीय साहित्य में नहीं है, जो अपने नियमों के विस्तार में पूर्ण तथा वर्णन में व्यापक है।[1] पूर्ववर्ती युग के आध्यात्मवादी प्रचार के विरूद्ध हुई भौतिकवादी प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करने वाला यह ग्रंथ शासन की कला का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है।[2] इसमें राजनीतिक के विविध पक्षों की विपुल विवेचना प्रस्तुत की गयी है।[3] शासन की वास्तविक समस्याओं को सुलझाना ही इस ग्रन्थ का उद्देश्य था।[4]

कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री तथा पुरोहित थे और नन्दों का नाश करके भारत को राजनीतिक एकता के सूत्र में बाँधने का सफल प्रयास करके उन्होंने चन्द्रगुप्त मौर्य को भारत का सम्राट् बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह किया था। अर्थशास्त्र के अन्त में कहा गया है कि इसकी रचना उस व्यक्ति ने की है, जिसने क्रोध के वशीभूत होकर शस्त्र, शास्त्र और नन्दराज के हाथ में गयी हुई पृथ्वी का उद्धार किया।'अर्थशास्त्र मौर्यकालीन रचना है जिसमें कौटिल्य के विचार उसी के क्षरा प्रस्तुत किए गए हैं। कालान्तर में अन्य लेखकों द्वारा इस ग्रन्थ में कुछ प्रक्षिप्तांश जोड़ दिए गए जिससे मूल ग्रन्थ का स्वरूप परिवर्तित सा हो गया और कुछ विद्वानों ने इसे बाद की शताब्दियों का स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं किया।[5] परन्तु ग्रन्थ में वर्णित कुछ वाक्यों या अध्यायों को छोड़कर यह कहना ज्यादा न्यायसंगत है कि इसका अधिकांश भाग मौर्यकालीन है।[6]

कौटिल्य ने राज्य को एक मानवीय संस्था के रूप में प्रस्तुत करते हुए राजनीति को धर्म और नैतिकता के प्रभाव से मुक्त करने का प्रयास किया है। दर्शन–विवादों से दूर रहकर राज्य के एक व्यावहारकि स्वरूप को प्रस्तुत करना उसका प्रमुख ध्येय था। उसकी राजनीति का मूलमंत्र साम, दाम, दण्ड, भेद की नीति में समाहित था और इस नीति द्वारा दुर्बुद्धि राजपुत्र को भी सन्मार्ग पर लाने का पूरा प्रयास करता है।[7] श्रेष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साधनों को उचित बताते हुए उसने कहा है कि 'छल के द्वारा कार्य की सिद्धि सहज है।'[8] उसके मतानुसार राजनीति में सभी कुछ वैध है और अपने उद्देश्य को प्राप्त करने एवं सफल होने के लिए विरोधी को किसी भी उपाय से समाप्त करने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए। उसने एक ऐसे राज्य की परियोजना की थी जिसकी सत्ता व्यापक हो।[9] राजा को धर्म–प्रवर्तक मानते हुए उसका मत है कि जनता में उपद्रव प्रायः राजा के अज्ञान तथा उसके अनुशासनहीनता के कारण होते है। अतः राजा को इन्द्रिय–निग्रह का अभ्यासी होना चाहिए।[10] राज्य को बचाए रखने के लिए लोगों से दरिद्रता, द्वेष एवं लाभ उत्पत्र होने का अवसर न देना राजा का परम् कर्त्तव्य बताया गया है। मंत्री, पुरोहित, भृत्य वर्ग, अमात्य, अध्यक्ष, सेना तथा दुर्ग पर आयी हुई विपत्ति का कारण राजा को कहा गया है।[11] सेना के उचित संगठन पर प्रकाश डालते हुए उसने जहाँ एक ओर हस्ति, अश्व, रथादि का उल्लेख प्रस्तुत किया है वहीं पदाति सेना के 6 अंगों **मौल, भृत्य, श्रेणी, मित्र, अमित्र और आटविक** का विशेष उल्लेख किया है। राज्य में आए आन्तरिक और बाहरी कोष को राजा तभी समाप्त कर सकता है जब उसके पास उचित सैन्य बल हो। राज्य की विस्तारवादी नीति और पारस्परकि सम्बन्धों को आधार मानते हुए कौटिल्य ने मण्डल सिद्धान्त की जो व्याख्या प्रस्तुत की है, वह अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण है,[12] जिसके क्रियान्वयन हेतु सन्धि, विग्रह यान आदि नीतियों[13] को यथार्थ रूप देने का सफल प्रयास किया गया है। राज्यों में दूत व्यवस्था के अन्तर्गत उसने उनकी तीन श्रेणियों–निःसृष्टार्थ, परिमितार्थ और शासनहर[14] पर प्रकाश डालते हुए दो प्रकार के गुप्तचरों–संचरा का

उल्लेख किया है। इस प्रकार समय और आवश्यकता के अुनरूप कौटिल्य द्वारा लिखित अर्थशास्त्र, राजनीति पर लिखा गया एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जो शासन विषयक समस्त बिन्दुओं को अपने में समेटे हुए है। देश और काल के अनुरूप ही इसमें राजनीतिक व्यवस्था का सजीव चित्रण मिलता है।

कौटिल्य की विचारधारा के सबसे करीब यदि कोई पाश्चात्य विचारक हैं, तो वह निश्चित रूप से मैकियावली ही है। राजनीतिक दर्शन में उसकों 'युग का शिशु' कहने के साथ साथ 'आधुनिक युग का जनक' भी बताया जाता है। 1969 ई0 में इटली में जन्में उसके राजनीतिक विचारों के प्रतिपादन में देश और काल दोनों की एक पृष्टभूमि है। उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि मानव स्वभाव, दुष्ट और धोखेबाज होता है, इसलिए उससे निपटने के लिए सरकार भी उतनी ही निरंकुश और शक्तिशाली होनी चाहिए। कौटिल्य की ही भाँति उसका भी दृष्टिकोण था कि 'श्रेष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सभी साधन उचित है।'[16] मैकियावली दार्शनिक न होकर एक पक्के अवसरवादी राजनीतिज्ञ थे। राजा को सफलता प्राप्त करने के लिए उन्होने उसे अनैमिक उपाय अपनाने का परामर्श दियां कौटिल्य की ही भांति मैकियावली भी दृढ़ राष्ट्रवादी और अपने देश की एकता को स्थापित करने हेतु कटिबद्ध थे। कौटिल्य ने यदि विशाल राष्ट्र स्थापित करने के दृष्टिकोण से 'अर्थशास्त्र' की रचना की तो मैकियावली ने इटली की एकता स्थापित करने हेतु 'द प्रिंस' की रचना की। दोनो ही अपने देश में मुख्य राजनीतिक पदों पर आसीन थे। कौटिल्य यदि चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री थे, तो मैकियावली लगभग 15 वर्ष इटली के प्रधान सचिव तथा यूरोप के अनेक देशों में राजदूत रहे थे। कौटिल्य की ही भांति मैकियावली ने भी 'द प्रिंस' में राजा को प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सुझाव दिए है, जिसमें से कुछ प्रकार हैं–

1. मैकियावली के अनुसार नए राजतन्त्र को स्थापित करने में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में राजा को अपने पड़ोसी के निर्बल राज्यों के साथ मित्रता स्थापित करके बड़े और प्रतिद्वन्द्वी राज्य के विरूद्ध मोर्चा बनाना चाहिए। यादि राज्य पर किसी आपत्ति की सम्भावना हो, तो सम्भावना हो, तो सम्भावना हो, तो सम्भावना आने के पहले ही उससे निपट लेने का प्रयत्न करना चाहिए।[17]
2. राजा को कभी भी ऐसी बुराइयां करने से नहीं डरना चाहिए जिसके कारण वह अपने राज्य को सुरक्षित रखने में सफल हो सकता है।[19]
3. उसके अनुसार राज्य की रक्षा करना राजा का परम् कर्त्तव्य है, इसके लिए उसे कुछ भी साान अपनाने पड़े, सभी प्रशंसनीय कहे जायेंगे।
4. मैकियावली का कहना था कि यदि आप राजा हैं तो उदारता हानिकारक है। यदि आप राजा बनने की कोशिश कर रहे है तो बेहतर यही होगा कि लोग आपको उदार समझें।[19]
5. राजा के लिए यह उचित वह सीमा की रक्षा व्यवस्था मे अधिक ध्यान न देकर राजधानी की किले बन्दी पर अधिक ध्यान दे और पूरे वर्ष के लिए शस्त्र और सामग्री एकत्र करे।[20]
6. राजा को कभी भी किराये की सेना पर भरोसा नहीं करना चाहिए। उसे स्वंय की सेना रखनी चाहिए।[21] यदि राजा के पास अपनी सेना साथ हो तो क्रूर बन जाने में जरा भी परवाह नहीं करना चाहिए। मैकियावली का यह भी मानना था कि बातों से जनता को समझाकर वश में नहीं किया जा सकता उससे बातें करने के लिए शस्त्र के हाथ में होना आवश्यक है।
7. राजा को चाहिए कि जिस राज्य पर वह अधिकार स्थापित करें, उसके सारे परिवार तथा सम्बन्धियों और सामन्तों को पूर्णतया समाप्त करे दे। ऐसी होने से उसके विरूद्ध विद्रोह होने की सम्भावना नहीं रहेगी।[22]
8. मैकियावली का मानना था कि जो कार्य जोखिम और जटिल हो उसे अपने पदाधिकारियों को सौपना चाहिए और सम्मानित कार्य को उसे स्वयं करने की अभिलाषा रखनी चाहिए। इससे उसके सम्मान में वृद्धि होगी। लोगों से प्रेम करने की अपेक्षा उसे डाराना कहीं ज्यादा अच्छा है।[23]

उपरोक्त समस्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि मैकियावली राज्य की सम्प्रभुता के पोषक (Supporter of the sovereignty) थे। उन्होने राजा को सलाह दी वह प्रत्येक प्रकार का साधन अपना

सकता है। कौटिल्य की ही भांति वह भी राष्ट्रीयता के समर्थक (Supporter of the Nationality) थे। दोनों ने निर्भीकता के साथ लोगों को अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए प्रेरित किया और इतिहास के अध्ययन में समान रूप से बल दिया। दोनों ही विचारकों ने एक केन्द्रीय सत्ता की स्थापना पर जोर दिया और शक्ति की सर्वोच्चता की पूजा की। दोनों ने शासन को सूचारू रूप से संचालित करने हेतु योग्य पदाधिकारियों की नियुक्ति पर बल दिया। दोनो ही राजतंत्र और गणतंत्र के विचारक थे, परन्तु जितना महत्व दोनों ने राजतंत्र को दिया उतना शासद गण्तंत्र को नहीं प्रदान किया। दोनो ने ही राजनीति में छल–कपट, विश्वासघात और नैतिक दृष्टि से जघन्य माने जाने वाले सभी कार्यों का समर्थन किया है। दोनों का उद्देश्य था कि राज्य सैनिक दृष्टि से मजबूत होना चाहिए क्योंकि राजा राज्य की रक्षा करने और उसकी सीमाओं को बढ़ाने में तभी सफल हो सकता है जब उसके पास अच्छे सैनिकों की कतार हो। दोनों का यह मानना था कि अच्छे सैनिक नहीं मिलते बल्कि अच्छे सैनिकों द्वारा लूट आदि से धन प्राप्त होता है। दोनों ने यह बताने की येष्टा की कि राज्य एक ऐसी सर्वोपरि सत्ता है जिसकी अधीनता में ही अन्य सारी संस्थाये और संगठन उत्रति की ओर अग्रसर हो सकते है। राज्य द्वारा नियन्त्रित होकर ही वे अपना कार्य सुरक्षित होकर सुचारु रूप से कर सकते है। राजतंत्र के प्रबल समर्थक होते हुए दोनों ने यह स्वीकार किया कि राजा बिना अच्छे कानून के स्थायी नहीं रह सकता। दोनों ने ही कारण न्यायालयों की व्यवस्था को अनिवार्य बताया है। दोनों का मानना था कि कानून और सरकार किसी भी राज्य के नागरिकों के राष्ट्रीय चरित्र और व्यकितत्व के प्रतीक होते हैं और उनमें नैतिकता और सदाचार जैसा भावनाओं का संचार करते है।

उपरोक्त अनेक समानताओं के होते हुए भी दोनों विचारकों में कुछ असमानतायें भी दिखती हैं। मैकियावली का सम्पूर्ण विचार दर्शन केवल राजनीति से ही सम्बन्धित है जबकि कौटिल्य ने सम्पूर्ण मानव जीवन का विस्तृत विश्लेषण किया है और इतिहास के अन्य पक्षों पर भी प्रकाश डाला है। कौटिल्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा एक विशाल साम्राज्य स्थापित करवाकर उस साम्राज्य के महामंत्री के रूप में अपने प्रशासनिक सिद्धान्तों को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करवाकर भारत को एकता के सूत्र में बांधने का जो प्रयास किया, वह मैकियावली द्वारा सम्भव न हो सका। इस तरह प्रशासनिक व्यवस्था के सन्दभ्र में कौटिल्य मैकियावली से ज्यादा व्यावहारिक थे। कौटिल्य मैकियावली की अपेक्षा अधिक दूरदर्शी प्रतीत होते हैं और उनके द्वारा स्थापित राजनीतिक सिद्धान्त आगे वाले समय में भी काफी प्रभावकारी सिद्ध हुए, परन्तु इतना होते हुए भी दोनों ही विचारकों को एक सच्चा देशभक्त मानने में कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। दोनों ने अपनी विचारधाराओं द्वारा प्रशासनिक व्यवस्था का जो सांगोपांग विवरण प्रस्तुत किया है, वह राजनीतिक क्षेत्र में अद्वितीय है।

सन्दर्भ एवं पाद टिप्पणियाँः

1. द्रष्टव्य बेना प्रसाद, द स्टेट इन एशिएण्ट इण्डिया, इलाहाबाद, (1928), पृ0 253
2. द्रष्टव्य एन0सी0 बन्द्योपाध्याय, डेवलपमण्ट ऑफ हिन्दू पॉलिटी एण्ड पोलिटिकल थेयरीज, कलकत्ता,(1938), पु0 54
3. लल्लनजी गोपाल, प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा, वराणसी (1999), पृ09
4. अनंत सदाशिव अलतेकर, प्राचीन भारतीय शासन पद्धति, वाराणसी, (2003), पृ0 9
5. रामशरण शर्मा के अनुसार अर्थशास्त्र का कुछ अंश सन की प्रथम दो शताब्दियों में संकलित हुआ और इस ग्रन्थ में उल्लिखित अनेक राजस्व स्रोत ईसवी सन् की दूसरी शताब्दी की वस्तुस्थिति को प्रतिबिंचित करते है। द्रष्टव्य प्राचीन भातर में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएं, नई दिल्ली, (1990), पृ0 11
6. द्रष्टव्य ए0एस0 अलतेकर, पूर्वोक्त, पृ0 11
7. अर्थशास्त्र, 1.17.6
8. तत्रैव, 5.1.12.4, 14.1–4
9. एच0एन0 सिन्हा, द डेवलपमेन्ट ऑफ इण्डियन पॉलिटी, बम्बई, (1963), पृ0 125
10. द्रष्टवय कौलेश्वर राय, इतिहास दर्शन, इलाहाबाद, (2004), राजनीतिक चिन्तन, अध्याय–3, पृ0 44

11. अर्थशास्त्र, 8.1.12–13, कौटिल्य ने सप्तांग सिद्धान्त के अन्तर्गत राज्य के सात प्रकृतियों (सप्त प्रकृतियुक्त) पर प्रकाश डाला है– ये प्रकृतियां है– स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोश्ज्ञ, दण्ड एवं मित्र अर्थशास्त्र 6.1
12. अराधना परमार, ए स्टडी ऑफ कौटिल्य अर्थशास्त्र, दिल्ली (1996) पृ0 202
13. अर्थशास्त्र, 7.1
14. तत्रैव, 1.16
15. द्रष्टव्य वी0सी0 पाण्डेय एवं अनूप पाण्डेय, ए न्यू हिस्ट्री ऑफ एंशिएण्ट इण्डिया, दिल्ली, (1998), पृ0 196
16. द प्रिंस में वह कहता है, "There is on natural law, no right universally agreed upon in politics in the sense of statemanship, most be held completely independent of morality. the end justifies the means"
17. द प्रिंस, अध्याय 4
18. तत्रैव, अध्याय 15
19. तत्रैव, अध्याय 16
20. तत्रैव, अध्याय 10
21. तत्रैव, अध्याय 12
22. तत्रैव, अध्याय 5
23. तत्रैव, अध्याय 31